# श्राद्ध में क्या करें, क्या ना करें ?

## श्राद्ध पक्ष 1 सितम्बर से 17 सितम्बर तक

श्राद्धकर्म पितरों की संतुष्टि के लिए किया जाता है, जो कि लगभग सभी हिन्दु लोग करते हैं। परन्तु श्राद्धकर्म करने के भी कुछ नियम और सावधानियां हैं जिनका कि ध्यान रखना चाहिये परंतु अज्ञानतावश अथवा लापरवाही के कारण कई बार कुछ विधानों का उल्लंघन हो जाता है, जिसके कारण पितरों को संतुष्टि नहीं मिलती है। हमें श्राद्ध कर्म करते समय किन विशेष बातों का ध्यान रखना चाहिये। श्राद्ध में क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये, आईये जानें।

श्राद्धकर्म प्रत्येक घर में किया जाता है इसके करने के पीछे मुख्य भावना पितृगण की संतुष्टि एवं स्व-कल्याण की होती है। श्राद्ध कर्म के विधान के संबंध में शास्त्रों में बहुत वर्णन किया गया है, लेकिन जनसामान्य के लिए तो यह असंभव-सा कार्य है। ऐसे में सभी लोग अपने विवेक के अनुसार एवं प्राप्त जानकारी के अनुसार श्राद्ध कर्म सम्पादित करते हैं, लेकिन कई बातें ऐसी होती है, जिनका अज्ञानतावश ध्यान नहीं रख पाने से श्राद्धकर्म का पूर्ण पुण्य प्राप्त नहीं हो पाता है। हम यहां ऐसी ही कतिपय करणीय-अकरणीय बातें दे रहे हैं, जिनका ध्यान रखने पर पितृगण संतुष्ट होते हैं एवं श्राद्धकर्त्ता पर पूर्ण प्रसन्न होकर उसे शुभाशीष प्रदान करते हैं : 1. श्राद्धकर्त्ता को श्राद्ध के दिन ताम्बूलभक्षण (पान खाना), तेलमर्दन (शरीर पर तेल लगाना), उपवास, परान्न भक्षण (दूसरे के यहां खाना) नहीं करना चाहिए एवं ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

2. श्राद्ध में भोजन करने वाले ब्राह्मण को यात्रा, भार ढोना, परिश्रम, दान देना, प्रतिग्रह, हवन एवं पुनः भोजन करना आदि कृत्य नहीं करने चाहिए एवं उसे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए। प्रयत्नपूर्वक प्रत्येक वर्ष मृत व्यक्ति की

**प्रयत्नपूर्वक प्रत्येक वर्ष मृत व्यक्ति की तिथि पर सांवत्सरिक श्राद्ध करना चाहिये। जो व्यक्ति माता-पिता का वार्षिक श्राद्ध नहीं करता, वह घोर तामिस्त्र नामक नरक को प्राप्त करता है और अन्त में सूकर-योनि में उत्पन्न होता है।**

तिथि पर सांवत्सरिक श्राद्ध करना चाहिये। जो व्यक्ति माता-पिता का वार्षिक श्राद्ध नहीं करता, वह घोर तामिस्त्र नामक नरक को प्राप्त करता है और अन्त में सूकर-योनि में उत्पन्न होता है।3. श्राद्ध वाले दिन लोहे के पात्रों का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिए। वर्तमान में सर्वत्र प्रचलित स्टील में भी लोहे का अंश अधिक होता है, अतः इसका भी प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि पूर्णतः परित्याग संभव नहीं हो, तो ब्राह्मण भोजन के समय तो अवश्य ही लोहे का प्रयोग नहीं करना चाहिए, भोजन यदि चांदी के बर्तनों में या पत्तल-दोनों में करवाएं तो श्रेष्ठ है।

4. श्राद्धकर्म में प्रयोग में ली जाने वाली कुशा चिता में बिछाई गई, रास्ते में पड़ी हुई, पितृतर्पण या ब्रह्मयक्ष में काम में ली गई, बिछौने, गंदगी या आसन से निकाली गई या पिंडों के नीचे रखी गई कुशा नहीं होनी चाहिए।

5. श्राद्ध में पितृकार्य के लिए श्रीखण्ड, चंदन, खस, कर्पूर सहित सफेद चंदन का प्रयोग करना उत्तम रहता है। अन्य कस्तूरी, रक्तचंदन, गोरोचन, सल्लक, पूतिक आदि की गंध का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

6. कदम्ब, केवड़ा, मोलसिरी, बेलपत्र, करवीर, लाल एवं काले रंग के पुष्प तेज गंध वाले पुष्प एवं गंधरहित पुष्पों का प्रयोग श्राद्ध में निषिद्ध है।

7. श्राद्ध में चोर, पतित एवं धूर्त, मांस बेचने वाले व्यापारी, नौकर, कुनखी, काले दांत वाले, गुरूद्रोही, शूद्रापति, शुल्क लेकर पढ़ने वाला, काना, जुआरी, अन्धा, कुश्ती सिखाने वाले एवं नपुंसक ब्राह्मण को नहीं बुलाना चाहिए।

8. जिस भोजन को संन्यासी ने या कुत्ते ने देख लिया हो, जिसमें बाल और कीड़े पड़ गये हों एवं बासी अथवा दुर्गंधित हो, उस भोजन का प्रयोग श्राद्ध में नहीं करना चाहिए।

9. मसूर, अरहर, राजमाष, गाजर, कुम्हड़ा, गोल लौकी, बैंगन, शलजम, हींग, प्याज, लहसुन, काला नमक, काला जीरा, सिंघाड़ा, जामुन, पिप्पली, सुपारी, कुलथी, कैथ, महुआ, अलसी, पीली सरसों, चना एवं मांस इनमें से किसी भी वस्तु का प्रयोग श्राद्ध के भोजन में नहीं करना चाहिए।

10. श्राद्ध करने के लिए कृष्णपक्ष एवं अपरान्ह को श्रेष्ठ माना जाता है।

11. चतुर्दशी को श्राद्ध नहीं करना चाहिए, लेकिन जो पितर युद्ध में या शस्त्रादि से मारे गए हों, उनके लिए चतुर्दशी का श्राद्ध करना शुभ रहता है।

12. दिन का आठवां मुहूर्त्तकाल 'कुतप' कहलाता है। इस समय में सूर्य का ताप घटने लगता है। उस समय में पितरों के लिए दिया गया दान अक्षय होता है।

13. मध्यान्हकाल, खंगपात्र, नेपालकम्बल, चांदी, कुशल, तिल, गौ एवं दौहित्र ये आठों भी 'कुतप' के नाम से जाने जाते हैं, श्राद्ध में प्रयोग करने पर शुभफलदायी होते हैं।

14. श्राद्धकाल में मन एवं तन को बाहर एवं भीतर से पवित्र रखना चाहिए, क्रोध एवं जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए एवं श्राद्ध एकांत में करना चाहिए।

15. श्राद्ध का भोजन स्त्री को नहीं करवाना चाहिए।

16. नाना, मामा, भानजा, गुरू, श्वसुर, दौहित्र, जमाता, बांधव, ऋत्विज एवं यज्ञकर्त्ता इन दर्सों को श्राद्ध में भोजन करवाना शुभ रहता है।

17. श्राद्ध में जौ, धन, तिल, गेहूं, मूंग, सरसों का तेल, कंगनी, आम, बेल, अनार, बिजौरा, पुराना आंवला, खीर, परवल, चिरौंजी, बेर, इन्द्र जौ मटर एवं कचनार का प्रयोग करना अत्यंत शुभ होता है।

18. श्राद्ध भूमि में सर्वत्र काले तिलों को बिखरेना चाहिए, जिस श्राद्ध में तिलों का प्रायेग किया जाता है वह अक्षय फल देता है।

19. पितरों को चांदी, सोना एवं तांबा अत्यंत प्रिय होता है, अतः इनका प्रयोग श्राद्ध में किया जाए, तो अत्यंत शुभ होता है। पितरों को तर्पण करते समय यदि तर्जनी अंगुली में चांदी या सोने की अंगूठी धारण कर ली जाए, तो वह श्राद्ध लाखों करोड़ों गुना फलदायक हो जाता है।

20. श्राद्ध के पिंडों को गौ, ब्राह्मण या बकरी को खिला देना चाहिए।

अंत में यही कहा गया है कि श्राद्ध में श्रद्धा की ही सर्वाधिक प्रधानता होती है, अतः जो भी कर्म आप करें उसे पूर्ण श्रद्धा से करें एवं अंत में


# दाम्पत्य सुख शान्ति पैकेट

कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर भी व्यक्ति चाहे तो स्वर्ग सा जीवन बिता सकता है। लेकिन स्वर्ग - सा जीवन जीने और बिताने के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता होती है पारिवारिक सुख की। पारिवारिक सुख यानी कि आपका दाम्पत्य जीवन। यदि व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है तो फिर उसके पास सबकुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है। दाम्पत्य सुख का सम्बन्ध अमीरी या गरीबी से नहीं है। गरीब व्यक्ति भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहकर अत्यन्त सुख और आनन्द की अनुभूति करता है वहीं कोई धनवान व्यक्ति सर्वस्व भौतिक सुख सुविधाओं के होते हुए भी पत्नी और बच्चों के साथ सम्बन्ध अच्छे ना होने पर दुःखी जीवन व्यतीत करता है। इसीलिये कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने घर में सुखी है वह संसार में सुखी है और जो व्यक्ति घर में दुःखी है उसके लिए सारा संसार बेगाना है। देखा जाये तो आज के समय में वे ही लोग भाग्यशाली हैं जो दाम्पत्य जीवन के सुख को भोग रहे हैं अन्यथा जगह-जगह लोग गृहक्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं। किसी की पत्नी सही नहीं है तो किसी के बच्चे कहने पर नहीं हैं, किसी की अपने पिता से नहीं बनती तो किसी के माता से मतभेद हैं। यदि आप अपने जीवन में दाम्पत्य सुख का पूर्ण लुत्फ उठाना चाहते हैं तो स्थापित कीजिए दाम्पत्य सुख शांति पैकेट और बना लीजिए अपने घर-संसार को स्वर्ग - सा सुंदर।

1. क्या आपका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है?
2. क्या आप दोनों के बीच वैचारिक मतभेद है?
3. क्या आप गृह क्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं?
4. क्या परिवार में अशान्ति का वातावरण है?
5. आपकी पत्नी या पति कहा नहीं मानते हैं?

आप भी उपरोक्त समस्याओं से त्रस्त हैं तो यह पैकेट आपके लिये विशेष उपयोगी है–

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1. मातंगी यंत्र 2. आम की लकड़ी का स्वास्तिक 3. जप माला 4.देवी यंत्र पैण्डल 5. मनसा वाचा पिरामिड 6.वास्तु यंत्र 7.सम्पूर्ण विधि

**न्यौछावर मात्र 3500 रुपये**

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

**HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331**

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

**त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र**

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org